



ॐ नमः श्रीगुरु कालिदेव्यो ॥ श्रीदेव्यवाच ॥ यदुक्तं रुवतादुर्व ॥ आरक्ष्य
कवृक्षावक्षता नाम्नामहर्ष्यदेव्या ॥ तदिदानीं वदयता ॥ श्रीमाहाकाला
वाच ॥ श्रुतिश्रीतामिदं वदति ॥ तवाहं वचसामुना ॥ सहस्रनाममुनीयत्
वदाम ॥ लमा लमी ॥ सूर्यायितीयद्वयिह्या ॥ कथोयथा तथायिते ॥ देव्या ॥
सहस्रनामास्त्री ॥ सायथायीयमदनी ॥ मय्ययुनायुवृक्षकलायिगवध्व

कीर्तिता। अरु कथयत आदं द्या यथार्कं गतया तथा। त्वयत त्वदं यार्ध
मायये प्रमदल्लरु। महायात कविर्धर्मि सुवर्धमिद्धि विदीयर्कं॥ महाका
यप्रदीपिद्यी। सयिमा मजयका प्रर्कं। विद्येकं दय्यदलनं विद्यदमहाविता
ता प्रर्कं॥ कथा इरिवा प्रतमर्नं महाविरुवदाय। मनश्चिन्तित काश्चि कद
साधर्कं वाग्मिता कर्न॥ अयूनावा अजनर्कं वलपूष्टिप्रदीप्यर्नं नयत

कप्रतीतिद्यी विवाय ऊचवद्वर्न॥ यवत अकय कर्न केवल्य इमृता कुरु
की। सिद्धिप्रत्ता कर्न छष्टं सय ४ प्रत्ययका प्रर्कं॥ नात ४ यवत नंदं द्या अरु
ह्यन्य छष्टिर्दयर्नं नाम्ना मरु प्ररु काय ४ कथायिद्या मिता यिथ ॥ १०॥
यल्लु वं सुवदं वानां मरु नु यतया क्तिर्न॥ दैत्यदानव यका धा न च्चदीव
गवदमर्न॥ प्राणवत्कठु दं मरु यल्लु प्र र प्रवदिथु गोदवधीनां मिनी नैति
अवदं वदवसना गत॥ सावकी मम हीया ले ४ यय ह यय यय नं। मया प्र विप्र

प्रथमं ज्ञायत यदि न दिनं ॥ यस्मात्तयनं नो रुचिता. सा सौ विजगती तल
वदव नमस्तु यच्च निवव कुविनिर्गति ॥ यत्ना इत्येकं नमस्व यामलजम
लं नयानवाच्यसंहितायकं. नेवव द्वापु लोकाक ॥ ससायमागर्वात रुम
तस्यामवदिष्टातानानाविधमहासिद्धि. काव दूयमर्थहाद ॥ यादवी सर्वद
वाना. यामाताजगदा कलायासृष्टि कलादवाना विध्य ॥ विविचया
सुता ॥ यावपिला ॥ ४ ॥ संहिता. यादवी सर्वसंयदा विद्य ॥ यावदिद

स्यतिष्ठत इमप्रयुजिता ॥ यूना एषयनिषदंया. यावकाजगदचिकायमा ॥
यथेनान्यदस्ति. किमपी हजगकथं ॥ सापुद्रा ॥ अस्त्ययसादन. वनीरुतवति
ष्टति ॥ अतजवमह लोकाय मंतजगति दूत ॥ २० ॥ य० नीर्यययत्त न. यवय
दमरीयू रि ॥ ४ ॥ किमन्ये ॥ सागति सात्रे नार्थयत यतिना रुत ॥ किमन्ये
॥ सायविस्कारे. यथेयं यतिना रुत ॥ इवामने नावदायकयिताया इय
यतमा ॥ दका यववसि जय. समुद्रोयवविष्टव ॥ अथ या इविदवसा

इव दंसाय मिसूयवा ॥ ॐ दानी कथायि मिसूयवा तदपि दनदयिता ॥ ॐ दूयुगु
 दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु
 संसदा ॥ ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥
 धिवन दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु
 ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु
 ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु

ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु
 कवाली मना उवाड ल्का मूखी रु द्वा लोवा, रीय द्वा रु द्वा लोवा, रीय द्वा रु द्वा लोवा, रीय द्वा रु द्वा लोवा,
 नी काल वायी र्गो वी क काल द्वा र्गो वी ॥ ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु
 वक्ता द्वा र्गो वी ॥ ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु
 ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु
 ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु दयने नष्टत्वा च वा इव दंसाय ॥ ॐ दूयुगु

धावाधिभुजटाजया॥ ॥ सावित्रीधरजननी नमो यही गगनालया नर
 वं यक्ष महायक निलयादावृणुता ॥ ३० ॥ उमा कयदिष्टिहिनी ऊर
 गदायाऊनाथया। कालक धुं कृणु लिनी हृतयतगताधिया॥ ॥ जा
 लन्धनी मसीदहापूषुनन्दायतझिनी। यालिनीयावकारासायसनायन
 मन्धरी॥ ॥ वनिधियाभागहरीनागहावनमस्तजा। अथयावीग
 वागवह्वानी हृतधविनी॥ ॥ कादम्बिनीनीलदहाकालीकाद

ध्वनी धिया। माननीयामहादवी महामधुलवल्लिनी॥ ॥ महामासाइ
 लनीमानी विद्यावागमचरा। यक्षाम्बुजासनादवी, दवीकवविह्वि
 ता॥ ॥ वगुमूषमथनी खचनीखचलें ठिता। तमालश्रमलतीवा, तावि
 नीतायनानिनी॥ ॥ माहामाया महार्द्रमहावगविवाडिता। लब्धाद
 वीला लज्जहारलक्ष्मीप्रदायिनी॥ ॥ धात्रीधावाधवाकावा। आर
 विनीधवनधिया। हवाजायाहवागव, हविषकाहवीधवी॥ ॥ २

विष्णुश्च वीरवदनस्त्री, वना हा हा वलपदा। धौतकी घघनावावा घावावा
घघुतासिनी॥ ॥ कल्याणकालिणी श्रीमाहात्म्यालिखवायया। रु
द्रिं किति ४ का रुनाचकालाचायना जिता॥ ४०॥ वक्रहस्ता इनकन
कि। विष्णुचाचयनायना। वक्रहस्तामहिनीयर्थसिमीलक रुजासती॥ ५
विष्णुजिह्वा महादुष्टाया चैवसूता। द्युतामहाकालानिमूर्ति
श्च। मेघनादाकटेकटा॥ ॥ प्रदीपाविष्णुयाचैवजीवदागीजनध्वनी॥

साक्षिणी गर्वनीमता, नममानप्रकाशिका॥ ॥ द्रुगुद्धाक्षयनीक्ष
म्या। इकताकामादवीदिति ४ जूषमया कलाचात्र, कलीकोलिकयालि
नी॥ ॥ माननीयामनागम्या, भना इनन्दप्रदायिनी। सिद्धान्तस्वनिवध
कामूणिनीमधुलप्रिया॥ ॥ वालादयवतीरुद्धा, वधुतीतावलपदा
वलमालाधनादोनादवीकप्रविशति॥ ॥ प्रदीपसुखिद्वान्तवृ
षि, द्विषीधावनप्रिया। सिकलिनो कल्याणकली कलागीताकलन

हि कानदं दामम ४ स्वस्ति प्रकालिनी । अथ ४ साम नू याच । मनुवा इह नू
यिही ॥ सर्वसा खामयी सर्व । पीत अथ निष दूषो । नोदी मृ त्यु पू याचि ना । महि
वै हायसी धृति ॥ ता ली या हं सिनी चाली । ता वा र्वे वि क्रमी हि नि ४ था गिनी ज
कि नी क्षा वा र्वे धृती विनय प्रदा ॥ उ यां तु मनि सी वा च्या वा च ना नू वि दा यिनी । स
त्वा हति सु भा नू या । वा ज सी तु ए व किं ता ॥ आ दि स न्नी दि का ली ना । कान वी न
रु सी न था मृ ता क्षा ना वृं लि नी स्वा धि मु न य वा य ता ॥ महि दू न क मा म च

विष्णुद्वारनाहता तथा आरुणाप्रकाशमहासंज्ञा वर्धनाद्या मन्त्रादिना ॥ ५ ॥ अथ
ननाकावाञ्छसंवाधवर्गो तथा याजायत्या महाबा ॥ ६ ॥ कानायायता निनी
वाक्षसीदानवीरुती, यित्ताचीयत्यनाकनाउदाकाय नूदाकाय, स्वनिता निः
स्ववायुजा ॥ ७ ॥ निष्कलायकलासाक्षीसाक्षात् ॥ ८ ॥ अथुदूयिणी ॥ अथवासा
वक्ष, यागुवीवामनीधरेवा ॥ काकमुखी साकलाय, कववाजम्भमन्त्रवी ॥ ९ ॥
दाययिम्भलायव, मूषमोक्षनलग्नववा ॥ सन्तोविमन्त्रधिसनी, कम्पिनीव ॥

निनीहितासंक्षेपविरासुवाच, निम्नादकाप्रकाशिनी ॥ अथवाक्षयभीक्ष्णिका
युधुहिलस्याविलम्बिता ॥ आवलिनीयववाच, वृक्षाक्षिनासुवस्यती ॥ निः
स्वचक्षुःकृद् ॥ १० ॥ अथवा, यावताचजहासिनी ॥ सन्तोवीनीयिनीचिव, हसिजि
काययसिनी ॥ विष्णुद्वारनाहताय, चिन्तामणि, विनीमती ॥ अथकागानन
नीमन्त्रामदिताचंतनायिवाजाविनीचयनालगा, यमिनीमधुमत्यायायमा
वसवहाचक्षु, सोवीवीकपिला तथा ॥ अथवा, कविनीच, वं वतीसूमुखीन

[illegible]

लक्षिता निवर्तिस्वस्तिका वृद्धि, निवृत्तिश्च महांदया ॥ वाष्पा विद्यावता मि
 ण, वासनाया गमं दिनी ॥ निवृत्तिना वृद्धि ॥ ४ ॥ सत्ताखायावमाथि की ॥ पु
 दिम्बनिवा रुमा, सदसदु यध्वनिनी ॥ उयलना वृद्धि ॥ दृढा विज्ञानम
 द्या गकि विद्या वासिता व, भादिनी मूदिता नना ॥ पुनरावृद्धि ॥ द्या ॥ मवृद्धि
 नवगप्रदा ॥ वानूनी माऊनी रुमा, पुतिता ॥ दृढा ॥ पुनरावृद्धि ॥ ४ ॥
 प्रीति ॥ ४ ॥ दृढिका नर्थल प्रिया ॥ स्वस्तिका सदसदु यध्वनिनी ॥ द्या ॥ मवृद्धि

का। सावित्री वं दजननी निगमा ज्ञातवादिनी ॥ ति क ल क वा ला च , का ल अ ल क
मालिनी। श्रीमा च का रु ना न ना , दी ना व का य क न वा य व सि नी च रा ला क प
विश्वमद न्य विदि ति। म ल्य ४ स ह द वा रु य धा य ड ड व ला रु की ग र , वि म य
पि रु स टा दी का य व लु स व र्ता म र्खी। वि डा वि सी वि श्व वू या , वि डा ना रु ग रा वि
नी ॥ वि डा वि सी भा द या णी , का ले व क श्र वी रु टी। त फ हा ग क वा ला च , क ता ना
उ कि रुं जि नी ॥ स व र्ता ज्ञा म यी रु या , दि नि र क क क द नि ४। म हा कु द्वा म

गानक कया लख गलं कता ॥ काला तिका ला काला ना, कवी च कवू ला निर
 धिष्ठाम दाधी ना यन तना, सँदाव का विधी तथा ॥ अनादि प्रमहान्मका, हत
 अथ सिर्ग कला ॥ श्री आ कालो च व कुम्भी, वदु याद कया दिका ॥ कला मय ना
 कला ना ध्या कल मा न वि तं ग्वनी ॥ दिग मय ना मूक कला, वदु मुखि नि वि म्वनी
 सुभा रुनी दारु कवी, सुमि नी वय्य का निती ॥ इह वा दय दल नी री ला क उ
 ननी ऊ या ॥ उना दी चो टन कवी, हया हया वि गाने ना वि नृ या का तना

गी श्रमहायणीमनाम्नी ॥ महावीर्या दूरनिडाचधुधाइ सुमपि ता नि
मला पुलिनी गला वरिणी चायका निणी ॥ लोदनी चक्रम दाका मूर
कालिसमो विणी ॥ द्यटा दवी कं दवी च पु ॥ लोदनी चक्रम दाका मूर
उमरुका, लानुमपुलना लिहा ॥ लोदनी चक्रम दाका मूर
विशुक्ली माहामात्री, सूची पुष्टी च द्रुका ॥ प्रसायिनी महातीखा ववली
याववयदा ॥ वधुचधु दाल द ह सभा द अ निमदिनी महादका कादः

गला, दाला जाल जल नदी ॥ माया रुण प्रकाशमा, महाविरुवदायि
नी ॥ यो व नदी विष्णु माया, किं किं ॥ यो व नदी ॥ या गला या गदाणी च
या गिनी या गवल्लुका ॥ महायुगी वयादाय स क नयनी दाला यान नदी यावकाश
यशमतययायला जग म ति किं गला ॥ यो व नदी विष्णु माया ॥ महायुगी वयादाय स क नयनी दाला यान नदी यावकाश
ला, मोनवतययायला जग म ति किं गला ॥ यो व नदी विष्णु माया ॥ महायुगी वयादाय स क नयनी दाला यान नदी यावकाश
झिनी रुवानी च सर्वला के धन वनी ॥ यावनी गला दाला माहि य मूरमा इनी ॥

बहुमूलायहृषीच, नकुवीउ, त्रिकुननी। निगुमुमुकु सधना, देवना, देवदुदास
कल्याणकालिणीकाली, कालमासाययायिनी। स्वप्नहृमाचमिणीच, याहिनी
नकिष्ठाविणी॥ १००॥ स्वप्नाहिनीमधुधनाहृमु, ननुचिना, नकुदोटाचिना
वाल, अगुनेलप्रधाविणी, नवकवालनकुल, सधहृमासममना। मूललीधा
विणीवकि, कलिनीउमनूयिया॥ रुद्रियालाहिणीधृमा, रमाध्यायविधिणी
तथा। मदिनाप्रमिनीनया, नतयदिमूषलिन्यायि॥ निवायातधनादधु, कु

गहृमाविधुलिनी। ननकुमुधनादानाकुत्रिकाकुनकुनदार्थता॥ कमधु
लूकनाइकामा, गृध्रायायधमालिनी। मीमखधुकवावीउ, धृनवयधना
कना॥ गदायनधुयधृका, मदिनाननधाविणी। धृताचयविगाच, रधृ
यधविधुलिनी॥ धृमनाइनचिनामूखीविहिनामिहयालिनी। कामनूयाका
मगवी, कमनीयाकलावती॥ गनपकलिन्दतनया, सिधो, गठावतीमही
नवासनस्वतीचन्द्र, रागाहृमादधुती॥ वावाधमीगयाधृवनी, काशि

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ अविजया द्वा मूर्खीदि क्वत्रवा मिनी ॥ महामन्त्रं ध्वनीवज्र प्रसाविज
 म्भुजनावती ॥ चण्डिकाया लंघनीय, स्वर्णकूटं ध्वनीतथा ॥ उग्रचण्डा म्भुजना
 य, चण्डावाहनिभञ्ज ध्वनी ॥ चण्डा म्भुजनाय च, चण्डिका चण्डनायिका ॥ वा
 द्यादिनी मधुमता, वायुलीलुम्बुदधनी ॥ वागीध्वनीययुल्लङ्घि, सोम्योयका
 लरुद्रवी ॥ दिगम्बराय धनदा, कालबाण प्रहृष्टिका ॥ किन्नाती निवदूती च
 कालस्य कर्षणी तथा ॥ कूटार्मकटाक्षवी, चण्डालमुमन्तो म्भिका ॥ महामन्त्रं

नृपतीनिध्याऽयमृदुःखं प्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता
मिणी विष्णुसहस्रनामं प्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता
तथानीयमत्र प्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता
मी विसृवी माहं धनी को मायलम्बा वा नाही नाव सिद्धी च जाम् (हृत्वा) प्र
थानिजा वलुप्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता
च हवसिद्धा कृत्वा प्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता

हृत्वा प्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता
हृत्वा प्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता
मी माहं धनी को मायलम्बा वा नाही नाव सिद्धी च जाम् (हृत्वा) प्र
थानिजा वलुप्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता
च हवसिद्धा कृत्वा प्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता
हृत्वा प्रदीपयन्तु नोधिः साधुद्विप्रसमं तत्र ता

नलादितां न हो मयूरा मायया दिते न भ्याता न... काल
अथ... मरुता... यागा... निह न नी...
... निमीय वा... मरुता... मरुता...
... मरुता... मरुता... मरुता...
... मरुता... मरुता... मरुता...
... मरुता... मरुता... मरुता...
... मरुता... मरुता... मरुता...

पृथीतथा वृंणानी न्मद्वीरुनी महाद्वी कथदिनी...
... काली... काली... काली...
... काली... काली... काली...
... काली... काली... काली...
... काली... काली... काली...
... काली... काली... काली...
... काली... काली... काली...

आशा अरुण

1.772

ASHA ARCHIVES

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आशा अरुवाथ

1.772

गुह्यकायासहस्रनामः॥

लीमहायू धिवकालिका गवकाली श्रीमकाली चण्डकाली तथैव च ॥ सं
शासकाली च गत ४० ॥ रुचकालिका ॥ विक्रान्तकाली श्रीधामकाली वि
कटकालिका ॥ १४० ॥ कर्नालकाली गदनू ॥ शरकाली गत ४० ॥ विरूति
काली श्रीकालकाली दक्षिणकालिका ॥ विशाकाली वज्रकाली महाकाली रु
चकाली गत ४० ॥ कामकलाकाली रुद्रकाली तथैव च ॥ भगवतकाली कामक
कालिका मूढकालिका कलकाली नायकाली सिद्धिकाली गत ४० ॥ उदा

अधः काली तथा अरुण कालिका तथा समय काली च कोलिकुक्रमः
कालिका क्लानविक्लान काली च चित्तका कालिका इषिवा अवेत का
ली यत्र मानन्द काली तरेवे च वासना कालिका योग रुमिकाली तत
४ यव ॥ ७ याधिकाली च महादेव काली ततः हयान निवृत्तिकाली च
तन्य काली वैराग्य कालिका ॥ समाधिकाली प्रकृतिकाली प्रत्यय
कालिका ॥ सहा काली च धर्ममाधिका ली नित्य कालिका ज्ञानात्म

काली यत्र मात्म काली वेद कालिका ॥ अतः तत्काली का धर्म का
लिका इत्यय कालिका ॥ तथैव लिखादि काली ततः यत्र मात्म काली
का प्रतिविकालिका चापि च काली ततः ४ यव ॥ ततः वन्य काली माहुर काली
ली च वन्य कालिका ततः अयमवष्टु काली चानु कालिका ॥ १६ या
माह काली च विक्लानमय काली ततः ४ यव ॥ अतः मात्म काली चानन्दमय
काली तरेवे च ॥ सर्व एष यत्र विक्लान निवृत्तमय कालिका ॥ ॥ ७ ॥

[illegible]

विषाद्यधिवानाहकालमृत्युं कथयति ननु तत्र नैव मृत्युः कालः ननु तत्र नैव
 चत्थं विषादावेव जायते ॥ तत्राद्येनाह ॥ अहो ॥ ४ ॥ आन्विकृतादिष्वपि कृतं
 वा ॥ आनूयान्मनावधानिच्छंतांस्तु न स्यादयति च तै ॥ सहस्रनामयूजाः
 नय ४ यत् १० रुक्मिणीविराट् ॥ ४ ॥ आनूयान्मनावधानिच्छंतांस्तु न स्यादयति च तै ॥ सहस्रनामयूजाः
 विद्यावानवलवान्वाग्मीनृपवान् रुक्मवन्नेरु ४ ॥ १० ॥ अष्टम्या ४ सव
 सत्त्वानां सर्वदोषयवान् ॥ १० ॥ कामिनीनां प्रियानि र्थमिष्टाणां प्राप्तिमद

निरुद्धा विदुर्नानि निमा द्वा ता हा का प्रियं वद ॥ अकव ४ सहिता ह्मा
नां वत्ता नामि व सा गव ॥ मनु ब्रुवामि दं ह्यं सा गं शे ला छ द्दुल्ल रं । २
वतस्य वदव ४ सनि व या ग मि दि द्या शि न्ना ता न वि कथ म न ग नि तत ४
मि द्वि य दी कथ ता ता व न वा य आ ह्वा ना म व के क स न वा ॥ ३ ॥ व द न्नी वि न
दि श्य (न य द्वा द्द म नू न्वा सं ता ३ म न्वा ने ता स व अ स्य न्वा द्वा ह्वा न्वा य म्वा य व नि
॥ माल ती कू सू म वि त्वि य प द्वा वा य म न वा म वृ (नि व न्वा द्वा क स वा वा य म न्वा

[illegible]

[illegible][illegible]

क्तायाधनानिहृयसिगुद्यायाऽऽनियार्चति। तानिनेतस्यठुल्यानि। क्तायाऽऽ
 निसुनिधिर्ता। वृद्धमवेतस्यठुल्यमर्थमर्थमथादिती। नाम्नासिद्धमर्थयथातत्यः
 विदुनाहलमत्वह। तदतानिय। निर्यानामानिक्तायाऽऽकऽऽचमुथा। गध्व
 नीवर्णी, वधुकायातिनीशिवा। नाम्नाचमुकासिद्धि, वरालीमधुमालि
 नी। कालयकेश्वरीद्वहस्माधनाहहामिनी। अमनीवर्षिकोपिद्धिविक
 वालीरुगयिया। उल्कासुखीपद्मकलुवल्गुमथनीयवा। इत्यामहामाय
 यागानिर्धार्यलाक्षाजननीध्वनी, कात्यायनीद्यानवृत्ताऊयनी। सर्वमन्त्राणां

[illegible]

मन्त्रयिथामथाकार्यवसद्विउः कारये तस्य चकार का॥ ततः प्रहृतिमनु
जीवन्त्या सा किरिधं मती॥ नो म्ना सह अयत ता का शुक्र किरिवा द्विति। च तस्या जी
किना दवी तस्या यिन रुव त्क ले॥ आख्या त य मती य त्ना दं त म्म द्य म यि वि २
या। तस्य स्मा प्र स्या हि य ता जी व न्या सा इ य मी वि त॥ २१०॥ धी गियु व द्या
वा व॥ हुं हुं कीं कीं हुं कीं यीं कीं खुं न न र ग व द्य युं उं वा ल्ये उ य
ऊ य ऊ य म हा व शुं या ए म्म वी व धुं का य निना सिद्धि क ला। क व क वा लि का या
लिनि, मू शु मा लिनि, वि उ ग ती या लिनि, ह रि श्रु ति म हा वा न ना ख्य ता यो इति

ववश्च दूयश्च विनिवृत्तं विप्रवृत्तावता विनिवृत्तं वकायति तस्मात्मा लिमा गणी द
महाधोने तत्र यश्च कायानने, वासिनि प्रहृ ह हानेने उ म्म विद्या उ का नि
नि न व यश्च व क ल य नि म हा जी व त रु ज ह व ल य नि त लि रु व न ऊ यि नि अ
स्मा सि त ग्म ग्म न का ल ह ल व ल य उ म्म ह ह त ह ले व न त म्मा स न नि क व
की क ग व वि त ए व य क मा ल य वि प्र म्म म हा वि ह न उ हा म्म व इ म्म व द्य क य
ल ह ल वि रु व न सा व प्र दी य क ल वि र म्मा य प्र व क ग रु ल क नू ज म्म य शु
मा त म्म क व उ व ग म्म न ना का व द ग व द न क ट क ट य मा न नि त दी ध व द न

कृतदिति ऊदनु ऊवदनं, लकविंनतिलावनं, माहाविततसमात्रयागय
मावनं, कृतयत्रमसदातिमनः ४५ मावनं, (लात्रितादलथिनिहालायाधि
नि, महामायिनि, वृद्धिनाथुवदीयकृतावाय, विहितयत्रमयानिवविला
मं, ऊयजनकमहादायलसामं, वृद्धवडावडा इमकाव, अथ्वाधामितमहावदं
यात्रतत्रवावपुकोलत्यावकलित्वाकथादिनि, कवकयतादिनि, वृद्धलम्व
मानादनीतायययहृदिनि, विष्टेष्टनीनतकादि, कृताकलवृद्धवदलिनि,
निखिलत्रियकूलकलिनिमहायलथकादि, नादिनि, वृद्धलानीतिकारवद

एतान्यदिप्रतियालनसंदात्रलात्रितिवृद्धलायलमथमात्रिनमदवृद्धक
त्रतात्रिति, यत्रायत्रसामत्रस्यवसमादिनि, रुकऊनमनात्रयथाहनि, दालिका
लसमथसन्धादिनि, वामककृतादयाधुवदि, तत्रवमालाकयालवृद्धयान
लकिखडाहमधुवृद्धीयायवृद्धयथावालथतलितानिमनः ऊर्ककाववृद्ध
दद्याकयान्माय, मूत्रनीमूत्रलवृद्धि, कृष्टमत्रयनिधिरि, दयाल, मूत्रलथ
द्विलयालगतथी, लियाथार्तदकि, वृद्धल, वलम्वितवत्रमालाकलि, काहया
लतऊलीहृदिदधुवत्रकृष्ट, वृद्धलथयथाधुयतवानकृन्तयात्रितात

वलेदह प्रजितमद्यजालं, उयपिगतकाटिमहाविद्याइकर्मप्रानकावि
नी, महार्णखसमाकूलं स्वयं विहसुहसु विद्युत्काटिद्विनीअं नवमासि
वमकवलनिनिवमदनिमुखद्वयकाटियविष्टतन्त्रु निहितयादाघातय
विवलितरुवलमधवधरुमिरी दोगहूमिगमनागकांन, मासलोविग
शक्तिनिद्वयकूल्यद्वयुद्धु, वकसुखीचलेगववि, धीवत्रवद्विक
यमद्यलेचद्विक, सकलमहायद्वयप्रुष्टि निमकलमनावष्टिनीमहाइ
रिवालत्यागष्टि नि, रुकाजनद्वययाइविनिद्विलिनि, काटियवधुकाचि

लिनि, केवल्यविद्विगलिनिगुद्धकालि, विष्टयय, सिद्धिविद्वमहावद्व
प्रजितंअमद्वितंअमिनेयुद्धतं, अयनाजितं, अउद्वतंअलोचल, अरु
यका, रुडमरुडमातद्विकिलाति, चाहुलि, दाविग, दविधि, ग्रामहि,
अमलि, उल्का, यष्टिनि, वज्रगुरुहिनीप्रलयताहुवमष्टिनी, ॐ न्याय
नृजननीमरुष्टयष्टिनि, सावित्रि, मययी, मरुणी, सवस्वती, मध्व,
लक्ष्मी, विहृतीप्रदं, कुमात्रियूवति, रुद्ध, सन्ध्या, महानागी, मायूषि, क

कूटि, शान्तिकवि, धृष्टिकवी, गंग, यमून, रामदावल, नर्मदा
सदाशिवसहस्रनामविधि, मरुतिलयताविधि, कोलाचात्रयतिनि
कलाचानकूटिनि, कलधर्मवक्रिक, अवीज, बानावीज, उगदीज, जी
वाधुव, अमृक, विमृक, नानामृक, मृक, इगीत, सकलमृकियन
वक्रालुश्री, वक्रालुकलवन, काठिवक्रालुसु, काठिवि, सव
धनि, सवधनकगम, सवधनसदाशिवनि, सवधनसवधनि, सुसीद

[illegible]

विष्णुयत ह्युरुयमीश्वरी। कवामलकवर्कैर्तद्गुणैर्नायसंलयः॥ चन्द्राव
 नमिदं विष्णुयत्किञ्चित् यत्रिहृत्प्रतं। नाकनीकं तथाऽख्याताऽसमस्ताऽ
 दवयानमः॥ यातालसंनिधावत्यानाममथादिसृष्टयः॥ श्रीश्वरीस
 मस्तानां गुणकालीखकीर्तिता॥ साकेयैतत्त्वाऽकस्यवर्णाहृतावतिष्ठ
 ति॥ ०००॥ बर्वकामहिमाकिङ्कर्तव्यामात्रं॥ तां गणनां त्वामवश्यं
 या० नीयाश्चवाश्रवागुरुकस्य॥ यमवदस्यमानयाः॥ नववन्दिताः॥ एत

[illegible]

[illegible]

श्री बलराम व श्री ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री यादव वृंजया मि नमः श्री ॥ श्री वरु क ना य श्री ॥ श्री ग
 न य मि श्री ॥ श्री शा मि नी श्री ॥ श्री ०० द श्री ॥ श्री ०० श्री ॥
 श्री य म श्री ॥ श्री नै वृ ति श्री ॥ श्री वृ न ह श्री ॥ श्री वा य श्री ॥ श्री क र न
 श्री ॥ श्री ०० श्री ॥ श्री वि श्री ॥ श्री वृ क श्री ॥ श्री या द व श्री ॥ श्री वृ ज या मि
 नमः ॥

